International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 404-405

धर्मशास्त्रों में राजा पर आरोपित आचार संहिता

डॉ. दयाशंकर तिवारी

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद पी.जी.कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

रघुवंश में राजा के लिए विनय की शिक्षा पर बल दिया गया है। कुमार–संभव में बड़ों के प्रति सम्मान की भावना का उल्लेख मिलता है। आभिज्ञानशाकुन्तल में विनय को राजकार्य की सफलता के लिए आवश्यक माना गया है–अवन्तिनम्राः। विशाखदत्त ने भी विनय के महत्व का उल्लेख किया है, कौटिल्य चन्द्रगुप्त को सम्बोधित करते हुए कहता है ''सैकड़ों राजा तुम्हारी जिस आज्ञा का पालन अवनत मस्तक होकर करते हैं उसका मेरे द्वारा उल्लघंन होने से तुम्हारा प्रभुत्व विनय से अलंकृत होता है– सा मय्येव स्खलन्तो प्रथयति विनयालङकृतते प्रभुत्वम्। इसी प्रकार चन्द्रगुप्त भी चाणक्य के प्रति सर्वत्र अपनी सम्मान भावना का प्रदर्शन करते हुए एक विनीत राजा का आदर्श प्रस्तुत करता है।

इन्द्रिय निग्रह की शिक्षा का उल्लेख गौतम धर्मसूत्र में मिलता है। कौटिल्य का मत है कि इन्द्रियों पर नियंत्रण विद्याओं की प्राप्ति, प्रवीणता तथा अनुशासन की दृष्टि से अति आवश्यक है–विद्या विनयहेतुरिन्द्रियजयः। कालिदास ने भी इन्द्रिय निग्रह को अति आवश्यक माना है। रघुवंश में यह वर्णन मिलता है कि राजा दशरथ संयम से अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण प्राप्त कर कौशल के राज्य का सफलतापूर्वक संचालन करते हैं–समाधिजितेन्द्रियः। आभिज्ञानशाकुन्तल में कालिदास ने जितेन्द्रिय राजर्षि वशिनेक्रा उल्लेख किया है। विशाखदत्त ने भी राजा की शिक्षा की दृष्टि से इन्द्रियनिग्रह को आवश्यक माना है। इस प्रकार कालिदास एवं विशाखदत्त दोनो ने राजा की शिक्षा पर अधिक बल दिया है तथा इस बात को स्वीकार किया है कि शिक्षा के द्वारा ही राजा को राजपद के गुरूतर दायित्व के योग्य बनाया जा सकता है।

राजा के व्यसन–कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सर्वप्रथम राजा के व्यसनों का क्रमबद्ध एवं विशद् उल्लेख मिलता है। धर्मसूत्रों में राजा के व्यसन का उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र की भाँति नहीं मिलता है। कौटिल्य के अनुसार व्यसन का तात्पर्य है गुणप्रातिलोम्यमभावः प्रदोषः प्रसंगःपीड़ा वा व्यसनं व्यस्त्येन श्रेयस इति व्यसनम्। गुणों (कुलीनता, वंश परम्परागत वीरता) का अभाव या अच्छे गुणों का विरोध या दोष, अत्यन्त प्रसंग, पीड़ा आदि। उसने छः प्रकार की दुष्प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है– कामुकता, लोभ, रोष, अहंकार, मद, तथा अतिसय प्रसन्नता। मनुस्मृति में दण्ड पारूष्य, वाक्यापारूष्य, अर्थदूषण, मद्यपान, द्यूत, स्त्री–संसर्ग, मृगया को राजा के व्यसनों के अन्तर्गत माना है। रामायण में राजा को चौदह दोषों से बचने के लिए उपदेश दिया गया है– नास्तिकता, असत्य भाषण, क्रोध, प्रमाद, कुसंगति, आलस्य, आसक्ति, मन्त्रियों के परामर्श को न स्वीकार करना, अज्ञानी व्यक्तियों से विचार–विमर्श, शास्त्रों के विपरीत आचरण, गोपनीयता को भंग करना तथा एक ही समय में कई बातों को स्वीकार करना आदि। कालिदास ने भी राजा के परम्परागत दोषों का वर्णन किया है जिनसे बचने का प्रयास उसे करना चाहिए। रघुवंश नामक ग्रन्थ में राजा दशरथ के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है कि आखेट का व्यसन, द्यूतक्रीड़ा, मदिरापान तथा स्त्री संसर्ग आदि दुर्गुणों से वे दूर रहते हैं– न मृगयाभिरतिर्न दुरोदरं नच शशिप्रतिमाभरणं मधु। राजा अतिथि अपने आन्तरिक दुर्गुणों जैसे काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मात्सर्य आदि पर नियंत्रण करते हैं। कालिदास ने इन दुर्गुणों के परिणामों का भी उल्लेख किया है। रघुवंश में राजा अग्निवर्ण का उल्लेख मिलता है जो अतिसय काम भावना से ग्रसित होने के कारण मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार कालिदास के अनुसार आवेश के कारण ज्ञानी लोग भी अनुचित कार्य कर बैठते हैं तथा ऐश्वर्य पाकर राजा लोग मतवाले हो जाते हैं अतः राजा को निर्भय होकर अपनी रक्षा करनी चाहिए, लोभ रहित होकर धन का संचय करना चाहिए तथा सांसारिक सुखों से मोह नहीं करना चाहिए। आभिज्ञानशाकुन्तल में भी राजा के परम्परागत दोषों जैसे काममृगया का उल्लेख मिलता है। विक्रमोवर्शीय नामक ग्रन्थ में काम भावना से पीड़ित होने के कारण राजकार्य से उदासीन राजा पुरूरवा का उल्लेख मिलता है। विशाखदत्त ने भी राजाओं के दुर्गुणों का उल्लेख किया है कालिदास के समान ही विशाखदत्त का यह मत है कि अहंकारी राजा का नाश हो जाता है। इसी प्रकार विशाखदत्त ने काम भावना से ग्रसित राजा पर्वतेश्वर का उल्लेख किया है जो विषकन्या के द्वारा मारे जाते हैं। इसी प्रकार मुद्राराक्षस में दुराचरण एवं विवेकहीनता कायरता, भय स्त्रीसंसर्ग, मद्य, मृगया–स्त्रीमद्यमृगयाशीलौ, लोभ, क्रोध आदि दुर्गुणों एवं उनके दुष्परिणामों का उल्लेख मिलता है।

राजा का निश्चित कार्यक्रम–इसका उल्लेख सर्वप्रथम अर्थशास्त्र में मिलता है। कौटिल्य राजा के दिन और रात्रि के कार्यों को आठ भागों में विभक्त करता है। दिन के प्रथम भाग में राजा राज्य की सुरक्षा एवं आय–व्यय के साधनों के विषय में विचार करता है, दूसरे भाग में प्रजा के कार्यों की देखभाल करता है, तृतीय भाग में वह स्नान, भोजन एवं स्वाध्याय करता है, चतुर्थ भाग में राजस्व ग्रहण करने के सम्बन्ध में विचार करता है, पाँचवें भाग में मन्त्रियों से मन्त्रणा तथा गुप्तचरों द्वारा दी गई सूचना को ग्रहण करता है, छठे भाग में मनोरंजन, सातवें भाग में सेना का निरीक्षण तथा आठवें भाग में सेनापतियों के साथ सैन्य संचालन की विभिन्न योजनाओं पर विचार–विमर्श करता है। कौटिल्य ने रात्रि को भी आठ भागों में विभाजित किया है। मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में राजा के निश्चित कार्यक्रम का उल्लेख मिलता है। कालिदास ने आभिज्ञानशाकुन्तल में इस बात का उल्लेख किया है कि जिस प्रकार सूर्य अपने अश्वों को एक ही बार रथ में जोतता है, वायु दिन–रात चलता रहता है–रात्रिं दिवं शेष सदा पृवी को भार उठाए रहता है उसी प्रकार राजा सततरूप से अपने कर्तव्यों का पालन करता है। मालविकाग्निमित्र नामक ग्रन्थ में वैतालिक द्वारा राजा को दोपहर हो जाने की सूचना दी जाती है। विक्रमोवर्शीय नामक

ग्रन्थ में दिन के षष्ठ प्रहर की समाप्ति पर राजा के विश्राम करने का वर्णन किया गया है। राजा
राम समय से प्रजा के कार्यों का देखभाल करते हैं। रघुवंश में राजा अतिथि द्वारा शास्त्रों के अनुसार निर्धारित दिन और रात्रि के समस्त कार्यों का विधिपूर्वक पालन किए जाने का वर्णन किया गया है–
रात्रिं दिवविभागेषु यदादिष्टं महीक्षिताम्। विशाखदत्त ने भी राज्य कार्य की गुरूता का उल्लेख किया है तथा यह मत व्यक्त किया है कि यदि राजा को व्यक्तिगतरूप से कष्ट भी सहना पड़े, तब भी उसे राज्य हित में नियमानुसार कार्यों को करना चाहिए।[1] विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में– अर्द्धरात्रसमये[2], मध्याह्नात्[3] जैसे शब्दों का प्रयोग किया है जिससे संकेत मिलता है कि राजा निश्चित कार्यक्रम के अनुसार कार्य करता है।

संदर्भ

1. रघु0 10:79 स्वाभाविकं विनीतत्वतेषां, विनयकर्मणा
2. कुमार0 5:31, 5:32, 6:53, 7:72
3. आभि0 शाकु0 5:12, विक्रमो0 पृ0 137
4. मुद्रा0 3:24
5. मुद्रा0 अंक 3 पृ0 264
6. गौतम0 11:4
7. कौटिल्य 1:6, मनु0 7:44 जितेन्द्रियो, कामन्दक 1:55–58, शुक्रनीति 1:44–1